संस्कृत शब्द की उत्पत्ति

संस्कृत शब्द की उत्पत्ति

सम् + कृ + क्त =संस्कृत

सम् – उपसर्ग

कृ – घातु

क्त – प्रत्यय (भूत काल के लिए प्रयोग होता है)

संस्कृत भाषा को देने वाले प्रथम मुनि पाणिनि हैं। इनके पिता का नाम 'पणिन्' माता का नाम 'दाक्षि' था। इनके गुरु का नाम उपवर्ष है। इन्हें वर्ष के नाम से भी जाना जाता है। पाणिनी की संस्कृत भाषा या व्याकरण पर लिखा गया जो ग्रन्थ है उसका नाम 'अष्टाध्यायी' है। क्योंकि इसमें 8 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में चार–चार पाद है। इस प्रकार यह संपूर्ण ग्रन्थ 32 पदों में विभक्त है। पाणिनी को सूत्रकार नाम से भी जाना जाता है। पाणिनी के साथ–साथ 'काव्यांजलि' जिनका उपनाम 'वरुचिकार' है। वृत्ति देने के कारण इन्हें 'वार्तिकार' नाम से भी जाना जाता है। दूसरे महर्षि 'पतंजलि' जिनका उपनाम 'महाभाष्यकार' है। इन्होंने भी संस्कृत भाषा के लिए 'महाभाष्यकार' की रचना की। इस प्रकार पाणिनि, वरुचिकार और पतंजलि इन तीन विद्वानों की संस्कृत भाषा के की उत्पत्ति और निर्माण में अहम भूमिका हैं।